उपसंहार

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

उपसंहार

''दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में चित्रित यथार्थ'' के अध्ययन पश्चात निष्कर्ष रूप में जो तथ्य सामने आए हैं उनका निचोड़ यहाँ सार रूप में प्रस्तुत है -

दूधनाथ सिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

दूधनाथ सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के गहरे अध्ययन के पश्चात मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि उनका व्यक्तित्व स्वाभिमानी, मुसीबतों का सामना करनेवाला योद्धा, प्रेमी, व्यसनहीन, नारी जीवन की वास्तविकता के जानकार, मातृभाषा प्रेमी, प्रतिभासंपन्न, कर्मठ, संघर्षशील, भावुक तथा नवयुवकों के प्रेरणास्थान आदि अनेकविध विशेषताओं से भरा-पूरा मिलता है। उनका बचपन अभावग्रस्त स्थिति में गुजरा है। साथ ही अपने माता-पिता का भी उन्हें ज़्यादा दिनों तक साथ तथा प्यार नहीं मिला। परिणामत: उन्हें जीवनयापन करते समय शुरू से ही संघर्षरत रहना पड़ा है। दूधनाथ जी को अपने निजी जीवन में अत्याधिक दिक्कतों से लड़ना पड़ा है। इन्हीं अनुभूतियों का चित्रण उनके रचना संसार में भली-भाँति दिखाई देता है।

दूधनाथ जी का रचना संसार काफी बड़ा है। उन्होंने समाज जीवन के जीवंत तथा ज्वलंत प्रश्नों को उठाकर वर्तमान में पनपी यथार्थ समस्याओं के खिलाफ़ अपनी कलम चलाई है। उन्होंने प्रमुखता से सांप्रदायिक विद्वेष, वर्णवादी व्यवस्था, धर्मांधता, जातीयता, तथा धर्म के आड़ में छिपी राजनीति आदि के खिलाफ़ आवाज उठाई हुई दृष्टिगोचर होती है। संक्षेप में कहना सही होगा कि दूधनाथ सिंह जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुमुखी है। उनका व्यक्तित्व आदर्श, प्रेरणादायी तो है ही मगर अनुगमन करने योग्य तथा ग्रहणीय भी परिलक्षित होता है। साथ ही उनका कृतित्व भी रास्ता भटके हुए मुसाफिर सदृश्य पाठकों को सही पथ-प्रदर्शन करनेवाला दृष्टिगत होता है।

दूधनाथ सिंह के उपन्यास : परिचयात्मक विवेचन

प्रस्तुत अध्याय के विवेचन विश्लेषण के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि दूधनाथ सिंह जी के 'निष्कासन' तथा 'आख़िरी कलाम' उपन्यासों की विषयवस्तुओं में भिन्नता तथा विविधता दिखाई देती है। उनका एक उपन्यास नायिका प्रधान है तो दूसरा नायक प्रधान। 'निष्कासन' उपन्यास की नायिका आर्थिक अभाव से ग्रस्त है। साथ-साथ वह दलित, पीड़ित, शोषित एवं वंचित है। 'आख़िरी कलाम' का नायक अपनी प्रतिकार विहीन बड़बड़ाहट से समाज में पनपी जातीयता, सांप्रदायिकता तथा धर्म के आड़ में छिपी राजनीति के खिलाफ़ आवाज उठाते हुए दृष्टिगत होता है। जो

सामान्य से सामान्य पाठकों के दिल को भी झकझोर कर रख देता है। प्रस्तुत उपन्यासों के नायक तथा नायिका दुर्दम्य आशावादी, संघर्षशील धैर्यवादी, जिज्ञासू, कर्तव्यपरायण, प्रभावी तथा संवेदनशील आदि गुणों से युक्त दिखाई देते हैं। प्रस्तुत उपन्यासों के वैषम्य के बारे में देखा जाए तो 'निष्कासन' उपन्यास की नायिका का संघर्ष सामाजिक है। यही दोनों उपन्यासों का मुख्य वैषम्य दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यासों के साम्य के बारे में देखा जाय तो दोनों उपन्यासों के मुख्य पात्र आख़री दम तक लड़ते हैं। मगर अंत में असफलता महसुस होने के बाद खुद मिटते है या खुद को मिटा देते हैं। प्रस्तुत उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात हम लेखक की गहरी सोच एवं असामान्य बुद्धिमत्ता तथा लेखन कौशल्य से भली-भाँति परिचित हुए बिना नहीं रहते।

प्रस्तुत उपन्यासों में पात्रों का चरित्र-चित्रण अत्यंत प्रभावशाली ढंग से हुआ है। साथ ही कथोपकथन भी अत्यंत मार्मिक तथा कथावस्तु विकसन में सफल और कम शब्दों में गहन अर्थ की अनुभूति करा देने से नहीं चूँकता। कुछ स्थानों पर प्रतीकात्मकता, बिंबात्मकता, काल्पनिकता तथा व्यंग्यात्मकता भी अवश्य दिखाई देती है। विवेच्य उपन्यासों में उत्तर-प्रदेश के भूभाग का वातावरण परिलक्षित होता है। विवेचित उपन्यासों की भाषा में यथासमय संस्कृत, अरबी, फारसी के शब्द तथा भोजपुरी जैसी बोलचाल की भाषा के संवाद भी दृष्टव्य होते हैं। इसके साथ पद्य पंक्तियाँ, लोकोक्तियाँ तथा मुहावरों का उपयोग दिखाई देता है। उपन्यासों में ज़्यादातर विवरणात्मक शैली, कथाशैली, किस्सागोई शैली, यात्रावर्णन शैली, पूर्वदीप्ति शैली तथा व्यंग्यात्मक शैली आदि शैलियाँ दिखाई देती हैं। प्रस्तुत उपन्यास अपने उद्देश्य पूर्ति में सफल सिद्ध हुए हैं। अत: कहना गलत नहीं होगा कि विवेच्य उपन्यासों का चित्रण उपन्यासकारने यथार्थ के साथ आदर्श रूप में प्रस्तुत किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

दूधनाथ सिंह के उपन्यास और शिक्षा जगत का यथार्थ

प्रस्तुत अध्याय के विवेचन विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष रूप में जो तथ्य सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं -

शिक्षा जगत के यथार्थ से मतलब है वर्तमान शिक्षा क्षेत्र की वास्तविकता। शिक्षा के मूल उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए छात्र, अध्यापक, शिक्षा अधिकारी (उच्च पदस्थ व्यक्ति) तथा कर्मचारी आदि घटकों की भूमिका देखना महत्त्वपूर्ण है। यही दर्शाने का लेखक का महत् प्रयास रहा है। 'आख़िरी कलाम' की तुलना में 'निष्कासन' उपन्यास में शिक्षा व्यवस्था से संबंधित चित्रण पर्याप्त

मात्रा में मिलता है। साथ ही इन उपन्यासों में छात्र जीवन का यथार्थ प्रचुर रहा है। इसका प्रमुख केंद्र विश्वविद्यालयीन प्रशासन है। विवेच्य उपन्यासों का उद्देश्य वर्तमान शिक्षा जगत के यथार्थ को उजागर करता रहा है। साथ ही साथ नारी को पुरूष सत्ता से मुक्त कर रहे है, मगर नारी ही नारी का किस प्रकार दुश्मन बनी हुई है यह 'निष्कासन' उपन्यास द्वारा स्पष्ट होता है। विवेच्य उपन्यासों में अध्यापक जीवन के यथार्थ को भी प्रस्तुत किया हुआ दिखाई देता है।

प्रस्तुत उपन्यासों में शिक्षा व्यवस्था से संबंधित प्रशासन का चित्रण भी किया हुआ परिलक्षित होता है। विवेच्य उपन्यासों में अखबारी दुनिया के वर्तमान यथार्थ को भी लेखक रेखांकित करता है। साथ ही दूधनाथ जी ने विवेच्य उपन्यासों में वर्तमान भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया है। अत: कहना गलत नहीं होगा कि शिक्षा जगत को अँधेरे में रखने के लिए हमारा समाज ही अधिक मात्रा में जिम्मेदार है। साथ ही जो अधिकारी वर्ग है वह अपने अधिकारों का दुरूपयोग कर शिक्षा क्षेत्र को भ्रष्ट कर रहा है। इन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए अध्यापक, छात्र, कर्मचारियों तथा हमारे पूरे समाज को संघटित होना आवश्यक है। अन्यथा शिक्षा व्यवस्था का पतन निश्चित है।

दूधनाथ सिंह के उपन्यास और सांप्रदायिक यथार्थ

उपर्युक्त अध्याय के विस्तृत एवं सूक्ष्म अध्ययन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वे इस प्रकार हैं -

सांप्रदायिकता एक ऐसी चिंगारी है जो आज आग का रूप ले रही है। अत: सांप्रदायिक यथार्थ से मतलब आज की सांप्रदायिक वास्तविकता से है। सांप्रदायिकता जैसी भयावह समस्या को केंद्र में रखकर जो भी घटता आ रहा है और घट रहा है वही सांप्रदायिक यथार्थ कहलाता है। प्रस्तुत उपन्यासों में 'निष्कासन' की अपेक्षा 'आख़िरी कलाम' में सांप्रदायिकता का चित्रण पर्याप्त मात्रा में मिलता है। विवेच्य उपन्यासों में सांप्रदायिकता से जुड़ी धर्मांधता एवं जातीयता का चित्रण भी काफी मात्रा में हुआ है। साथ ही सांप्रदायिकता के कारण हिंदू-मुस्लिमों के बीच अनबन भी दिखाई देती है। विवेच्य उपन्यासों में सांप्रदायिकता के कारण हुए दंगे-फसाद का चित्रण परिलक्षित होता है जो सांप्रदायिक विद्वेष की पराकाष्ठा है। प्रस्तुत उपन्यासों में दलित-सवर्णों के बीच अनबन, शिक्षा व्यवस्था, अखबार, राजतनीति, पुलिस, मिथकीयता साथ ही वर्णवादी व्यवस्था आदि बातें सांप्रदायिकता की भावना भड़काने में सहायक सिद्ध हुई हैं यह दृष्टिगत होता है।

प्रस्तुत उपन्यासों में सांप्रदायिकता को फैलाने में विवादास्पद धार्मिक किताबें तथा ग्रंथों का किस प्रकार दुरूपयोग किया है यह भी स्पष्ट होता है। साथ ही समाज में पनपे सांप्रदायिक उन्माद के मिथ्यापन को सामान्य पाठकों के सम्मुख उजागर करना तथा दिकभ्रमित समाज को नई दिशा देना लेखक का मूल उद्देश्य रहा है। साथ ही धर्म के नाम पर चल रहे अधर्म पर भी लेखक ने कड़ा प्रहार किया है। लेखक दूधनाथ जी का यह भी जताने का विनम्र प्रयास किया है कि सांप्रदायिकता के परिणामस्वरूप हिंदू-मुस्लिमों के बीच की साँझा संस्कृति का ह्रास किस तरह हुआ है। अंतत: मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि स्वतंत्रता के पश्चात ही सांप्रदायिकता की भावना तीव्र होती चली गयी है। इसका मूल कारण रहा है धार्मिक कट्टरता। अत: सांप्रदायिकता नामक पैशाचिक शत्रु से लड़ना है तो आवश्यकता है धार्मिक कट्टरता को त्यागने की, एकसंघ होने की अन्यथा विनाश अटल है।

दूधनाथ सिंह के उपन्यास और वर्तमानकालीन विविध यथार्थ समस्याएँ

प्रस्तुत अध्याय के विवेचन-विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष रूप में जो तथ्य सामने आए हैं, वे इस प्रकार हैं -

विवेच्य उपन्यासों में वर्तमान यथार्थ समस्याओं का चित्रण हुआ है। प्रस्तुत समस्याओं द्वारा लेखक आजकी वास्तविकता से परिचित कराते हैं। साथ ही विवेचित उपन्यासों में जातिवाद की समस्या प्रमुखता से दृष्टिगत होती है। इसके कारण समाज जीवन आज भी आक्रांत हुआ परिलक्षित होता है। प्रस्तुत समस्या का चित्रण पर्याप्त मात्रा में देखने मिलता है। लेखक ने वर्तमान युग में आम आदमी के सम्मुख खड़ी रहनेवाली सबसे महत्त्वपूर्ण अर्थ की समस्या का चित्रण भी किया हुआ दृष्टिगोचर होता है। वर्तमान में मानव विज्ञान युग में विचर रहा है। लेकिन अतिशय धार्मिकता को नहीं छोड़ रहा है। परिणामत: वह धर्मांधता की ओर बहे जा रहा है। 'आख़िरी कलाम' में इस समस्या को प्रमुखता से विशद किया है। प्रस्तुत उपन्यासों में पति-पत्नी के बीच अनबन की समस्या को भी अभिव्यक्त किया है।

वर्तमान समय में भ्रष्टाचार की जड़े पाताल तक पहुँची हुई प्रतीत होती है। लेखक ने भ्रष्टाचार जैसी समस्या को भी यथार्थता से प्रस्तुत किया है। विवेच्य उपन्यासों में प्रेम तथा अंतर्जातीय विवाह की समस्या तथा सांप्रदायिकता जैसी भयावह समस्या को व्यक्त किया है। साथ ही आत्महत्या जैसी सोचनीय समस्या को भी लेखक ने वाणी दी है। हर-एक माता-पिता को अपनी संतान प्राण से भी प्रिय होती है। लेखक ने संतान को लेकर माता-पिता की समस्या का चित्रण भी प्रभावी ढंग से किया

है। विवेच्य उपन्यासों में विभिन्न यथार्थ समस्याओं का विस्तृत रूप से उद्‌घाटन किया है । जैसे - अखबारी समस्या, मठों की समस्या, नारी समस्या, शिक्षा व्यवस्था की समस्या, कार्यालयों की समस्या, साथ ही मुस्लिमों की समस्या, दलित उत्पीड़न की समस्या, अवैध संतान की समस्या और गुंड़ागर्दी तथा छेड़छाड़ की समस्या आदि के साथ-साथ अन्य समस्याओं को लेखक ने यथार्थ तथा मार्मिकता से अंकित किया है। अत: कहना गलत नहीं होगा कि उपन्यासकार दूधनाथ सिंह ने अपने उपन्यासों के जरिए समस्याओं की गंभीरता एवं भयानकता से पाठकों को अवगत किया है। जरूरी है चिंतनशील एवं विचारक पाठकों को की जो समाज व्यवस्था को सुधारने की ललक रखते हैं। ऐसे पाठक ही जब विचारों को कृति की जोड़ देंगे तब ही रचनाकार की उद्‌देश्य पूर्ति होगी।

उपलब्धियाँ

1. दूधनाथ सिंह के उपन्यास समसामायिक सामाजिक यथार्थ को उद्‌घाटित करने में पर्याप्त मात्रा में सफल हुए हैं।
2. दूधनाथ सिंह के उपन्यास चिंतन की अपेक्षा वर्तमान समाज को गंभीर दृष्टि से चिंता करने के लिए प्रवृत्त करते हैं इसमें संदेह नहीं।
3. दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में चित्रित पात्र समूचे मानव जाति का प्रतिनिधित्व प्रस्तुत करनेवाले पात्र हैं।
4. दूधनाथ सिंह के उपन्यास-साहित्य में धर्म तथा जाति के आड़ से की जानेवाली राजनीति का पर्दाफाश किया है। साथ ही लेखक स्वार्थांध राजनियकों पर कड़ा प्रहार करते हुए आम पाठकों को उनकी वास्तविकता से परिचित कराते हैं।
5. दूधनाथ सिंह के उपन्यासों के नायक तथा नायिका अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न, शोषण, धर्मांधता, जातियता, स्वार्थांध राजनीति आदि के खिलाफ़ आखिरी दम तक संघर्षरत दिखाई देते हैं जो निश्चय ही पाठकों के लिए प्रेरक एवं आदर्श सिद्‌ध होते हैं।
6. दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में सांप्रदायिक और शैक्षिक जगत के कटू यथार्थ को प्रस्तुत किया गया है। विवेच्य उपन्यासों के सच्चाई को जानना निश्चय ही सुलभ होगा तथा इन समस्याओं को हल करने के लिए दिशा भी मिल सकेगी। प्रस्तुत अध्ययन की यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कहनी होगी।

अध्ययन की नई दिशाएँ

दूधनाथ सिंह के औपन्यासिक साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. दूधनाथ सिंह के उपन्यास : कथ्य एवं शिल्प
2. दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन
3. दूधनाथ सिंह के उपन्यासों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात प्राप्त हुए हैं, जिन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है। वस्तुत: प्रत्येक विषय की अपनी कुछ सीमा होती है। यहाँ मेरे अपने शोध विषय की भी एक सीमा है। शायद कल आनेवाले शोधकर्ता इन विषयों पर अनुसंधान कार्य संपन्न करेंगे।

❑❑❑❑